फूलों का 35 फुट ऊँचा बनाया शिवलिंग

बेलगाम। परमात्मा शिव की जयन्ति हम मना रहे हैं। हम जाने-अनजाने परमात्मा को याद करते हैं। लेकिन हमें उनका यथार्थ परिचय न होने के कारण हम उनसे शक्तियाँ प्राप्त नहीं कर सकते। परमात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध क्या है? उनका महत्व जीवन में क्या है? इस ज्ञान का अभाव है। इसी के परिणाम स्वरूप हम आज अपने जीवन में अशांति-तनाव व अवसाद-निराशा का शिकार हो जाते हैं। शिवजयन्ति के पर्व पर हम यह जान लें कि परमात्मा हम सभी आत्माओं का परमपिता है और उनसे हम सहज राजयोग के द्वारा नाता जोड़ सकते हैं। इस आध्यात्मिक ज्ञान को सभी जानें व समझें इसके लिए संस्था द्वारा यह प्रयास किया गया है। यह फूलों से बना शिवलिंग विश्व में पहली बार इतना बड़ा बनाया गया। जहां लाखों लोग देख भी रहे हैं और चित्रों के माध्यम से समझ भी रहे हैं। परमात्मा का व आत्मा का सत्य परिचय प्राप्त किया। जीवन में सच्ची सुख शांति के लिए इस ज्ञान के महत्व को सभी ने अनुभव किया।

ब्र.कु. अंबिका बहन ने सबको शिवजयंति की शुभकामनाएं दी तथा सभी को परमात्मा का परिचय प्राप्त कर अपने जीवन को सुख-शांतिमय बनाने कामना की।

कोल्हापुर की मेयर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान परमात्मा का संदेश सारे विश्व में फैला रही है और भारतीय संस्कृति को पुन: स्थापित कर विश्व में आध्यात्मिकता का झंडा लहरा रही है। मुझे खुशी है कि ऐसे शुभ अवसर पर मुझे आमंत्रित किया।

बेलगाम। शिव जयंति के अवसर पर 35 फुट ऊँचे व 20 फुट चौड़े शिवलिंग को 1500 किलो फूलों से बनाया गया। इस अवसर पर वर्ल्ड अमैजिंग रिकार्ड में अध्यक्ष पवन सोलंकी ने कार्यक्रम स्थल पर 'विश्व का सबसे बड़ा फूलों का शिवलिंग' को वर्ल्ड अमेजिंग रिकार्ड में शामिल किए जाने की घोषणा की तथा प्रमाणपत्र आयोजक -ब्र.कु. अंबिका, संयोजक -ब्र.कु.दीपक हरके को प्रदान किया। इस अवसर पर माउंटआबू से पधारे ओम शान्ति मीडिया के सम्पादक ब्र.कु.गंगाधर उपस्थित थे। इस शिवलिंग का उद्घाटन डीटीएमएफ द्वारा माउण्टआबू से स्वयं बापदादा ने रिमोट कन्ट्रोल द्वारा किया। पूरे विश्व के लोगों ने इसका प्रसारण देखा। अहमदाबाद के ब्र.कु.कश्यप तथा ब्र.कु.मुकेश ने मिलकर इसका संचालन किया। इस निर्माण में अहमदनगर के आर्ट डायरेक्टर नारायण बुरा तथा आर्किटेक्ट संतोष गायकवाड़ ने विशेष योगदान दिया।

वर्ल्ड अमैजिंग रिकार्ड में अध्यक्ष पवन सोलंकी ने वर्ल्ड अमेजिंग रिकार्ड का प्रमाणपत्र ब्र.कु.अम्बिका,ब्र.कु.दीपक, ब्र.कु.गंगाधार को प्रदान किया।

पवित्रता की मूर्ति - दादी निर्मलशान्ता का महाप्रयाण

जिन महानात्माओं ने धरा पर अवतरित भगवान को पहचानकर उनके दिव्य कार्य में साथ दिया। जिन्होने भगवान के एक इशारे पर धन्य, धान्य व वासनाओं का त्याग कर पवित्र व सादगी सम्पन्न जीवन अपना लिया, कितने महान थे वे और कितना महान था उनका बलिदान। उनमें से एक थी महान हस्ती दादी निर्मलशान्ता जी। वे बाबा की लौकिक पुत्री भी थी, बड़े लाड़-प्यार से पली थी, हीरे-जवाहरातों से खेली थीं। उन्हें देखकर बाबा की ही झलक मिल जाती थी। उन्होने 1936 में ही अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था।

हम उन्हें 45 वर्षों से देखते आए हैं। पिछले वर्ष तक भी वे सभी को अच्छी तरह पहचान पाती थीं। उनका त्याग व तपस्या तो एक इतिहास बन गया है। वे बहुत मधुर, शालीन, धैर्यवान व निर्मल थी। कभी किसी ने उन्हें क्रोध करते नहीं देखा। वे बाबा की ही तरह बहुत उदार भी थी। उन्हें देखकर लगता था कि ब्रह्मा बाबा भी कितने निरहंकारी रहे होंगे। बाबा की ही तरह वे भी छोटों के साथ छोटी व बड़ों के साथ बड़ी बन जाती थी। उनके बोल व व्यवहार से उनकी शालीनता झलकती थी। जब वे चलती थी तो मानो कि विश्व महाराजन चल रहा हो।

दादीजी ने 15-3-2013 को अमृतवेले 2.45 पर इस नश्वर देह का त्याग किया। उनके पार्थिव शरीर को अहमदाबाद से माउण्ट आबू में लाया गया और मधुबन के चारों धाम की यात्रा कराकर 16 मार्च को अंतिम संस्कार किया गया। उनके अंतिम दर्शनों के लिए समस्त भारत से कई हजार ब्राह्मण आत्माएं पधारी। यह उनके प्रति स्नेह व सम्मान का ही प्रतीक था। क्योंकि उन्होने सबको दिया ही दिया था। किसी से कुछ भी लिया नहीं।

दादी जी को हम सब परदादी कहते थे। जब कोई उनसे पूछता था कि आपको परदादी क्यों कहते हैं तो वे मुस्कुराकर बड़े सरल भाव से कहती थी कि मैं मान-शान, आसक्ति और तेरे-मेरे से परे रहती हूँ इसलिए सब मुझे परदादी कहते हैं। ऐसी महान व पुण्यात्मा को हम सब कोटि कोटि नमन करते हुए स्नेह व श्रद्धा के सुमन अर्पित करते हैं।

सकारात्मक सोच से आएगा बदलाव

दिल्ली। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद मेनका गांधी, दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती बरखा सिंह, ब्र.कु.शिवानी, ब्र.कु.चक्रधारी तथा अन्य।

दिल्ली (आर.के. पुरम)। आज की नारी को जो बात सुरक्षित रख सकती है वह है पुरूष वर्ग की सकारात्मक सोच। अगर हम अपनी सोच को नहीं बदलेंगे तो देश कैसे बदल सकता है।

उक्त विचार दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष एवं विधायक श्रीमति बरखा सिंह ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि मैं और मेरा परिवार ब्र.कु.शिवानी के कार्यक्रम को बहुत रूचि से सुनते हैं। मैं काफी वर्षों से इस संस्था से जुड़ी हुई हूँ। ब्रह्माकुमारी बहनों की सादगी व पवित्रता की शक्ति से ही लोगों को बहुत शांति मिलती है। सभी ईश्वरीय ज्ञान लेकर अपने विचारों को बदले और नये भारत की रचना करें। सोच बदले-जग बदलें।

सांसद श्रीमति मेनका गाँधी जी ने कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर कहा कि आध्यात्मिक चेतना लाना ही ब्रह्माकुमारी संस्था की विशेषता हैं।

ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि आजकल हम कई अच्छी चीजें सुनते व देखते हैं पर हमें उन्हें अपने जीवन में धारण भी तो करना है। हम हर किसी चीज के लिए भगवान को जिम्मेदार मान लेते हैं और अगर हम अपने भाग्य के लिए भगवान को जिम्मेदार ठहरा देते तो क्या वो हमारा भाग्य परफेक्ट व समान ना लिखता। पर परमात्मा हमारा भाग्य नहीं लिखता, हमारा भाग्य हमारे कर्मों पर निर्भर करता है। अच्छा कर्म - अच्छा भाग्य, बुरा कर्म - बुरा भाग्य। आज हम अपनी शक्तियों को भूलकर अपने जीवन को डर में बिताते हैं। कर्म के हिसाब से जो भी स्थिति हमारे सामने आती है वो तो आनी ही है उससे ना डरकर, अपनी स्थिति को सकारात्मक और शक्तिशाली बना लेना है। जीवन में जो भी स्थिति आये उसे स्वीकार कर लेना है। स्वीकार करने से आपका उस स्थिति के प्रति रिएक्शन पॉजिटिव होगा तो वो स्थिति हल्की हो जायेगी। परमात्मा हमें ज्ञान, प्यार और शक्ति देते हैं परमात्मा से ज्ञान लेने से शक्ति मिलती है, सोच बदलती है। सोच से संस्कार बदलते हैं। संस्कारों से कर्म बदलते हैं और कर्मों से भाग्य बदल जाता है।

ब्र.कु. चक्रधारी ने बताया कि आज सारे शास्त्रों के अनुरूप आचरण नही हो रहा है, ऐसे में हम आत्माओं को परमात्मा से कनेक्शन लगाना बहुत जरूरी है जब तक हमारा उस परमात्मा से कनेक्शन नहीं होगा तो हम खुद को और जग को नहीं बदल सकते। आप माने या ना माने आज परमात्मा शिव, ब्रह्मा तन में अवतरित हो चुके हैं और हमें शक्तियों से भरपूर कर रहे हैं।

ब्र.कु. अनिता ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। ब्र.कु. पुनीत मेहता, गायक, हिमाचल प्रदेश कार्यक्रम को गीतों, संगीत व नृत्य से सजाया)। मंच का संचालन ब्र.कु. ज्योति ने किया।

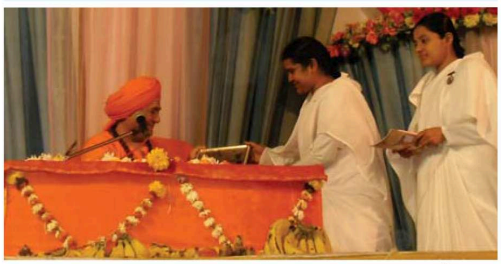

भिवंडी। स्वामी आत्मप्रकाश काशी वाले को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.बिन्दु तथा ब्र.कु.दीपा।